इकाई 14 युद्धोत्तर विश्व की झलक-II

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 जनसांख्यिकीय बदलाव, प्रवासन तथा नगरीकरण

14.3 आधुनिक वर्गीय समाजों में बदलाव

14.4 कार्य के तरीकों में परिवर्तन

14.5 शहर

14.6 परिवार

14.7 लिंग-भेद एवं महिला समानता संबंधी मुद्दे

14.8 सांस्कृतिक बदलाव

14.9 सारांश

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

- व्याख्या कर सकेंगे कि युद्धोतर दुनिया समाज तथा संस्कृति के संदर्भ में प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी से किस प्रकार भिन्न थी। साथ ही आप ये भी विवेचन कर सकेंगे कि क्या विश्व के सभी भागों का विकास समान रूप से हो रहा था;
- जनसांख्यिकीय तथा आवास संबंधी प्रारुपों में आए महत्वपूर्ण परिवर्तनों से अवगत हो सकेंगे;
- यह जान सकेंगे कि युद्धोतर परिदृश्य में विविध सामाजिक वर्गों को किन परिस्थितियों का सामना करना;
- प्रमुख तकनीकी विकासों तथा समाज पर उनके प्रभावों को व्याख्या कर सकेंगे; और
- परिवार संरचना एवं कार्य के प्रारुपों सहित सांस्कृतिक परिवर्तनों संबंधी विचारों को समझ सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

इससे पहले की इकाई में आपने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के आरंभिक वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में आए बदलावों तथा समाजवादी व पूंजीवादी विश्व के मध्य टकरावों के संदर्भ में राजनीतिक शक्ति संतुलन का अध्ययन किया। इसके साथ-साथ शताब्दी के अंत तक आते-आते सोवियत संघ के विघटन, अनौपनिवेशीकरण की प्रक्रिया तथा गुट निरपेक्ष आंदोलन के उदय के बारे में भी जाना।

अब इस इकाई में हम उसी दौर में सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलावों व विकासों के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आप देखेंगे कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में तथा बीसवीं

शताब्दी के पूर्वार्द्ध की तुलना में इस दौर में तकनीकी अन्वेषणों की संख्या काफी कम रही परंतु यूरोप तथा विश्व पर उनका व्यापक प्रभाव काफी परिवर्तनकारी रहा। लाखों लोगों के जीवन में बदलाव आया। पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव भी अब विश्व स्तर पर काफी बढ़ने लगा। उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप उभरे विश्व की संरचना तथा लोगों के जीवन में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में काफी बदलाव आया। लेकिन यह फिर भी पूँजीवाद औद्योगिकीकरण द्वारा निर्मित विश्व था।

यूरोप का यह समाज उत्तर-औद्योगिक समाज के रूप में जाना गया जिसने इस बात पर काफी प्रभाव डाला कि विभिन्न सामाजिक वर्ग आपस में किस तरह से संबंधित हैं। परंतु यह भी स्वाभाविक है कि इसका प्रभाव एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों जहां पर औद्योगीकरण की प्रक्रिया अभी भी पूरी नहीं हो पाई थी की जगह मुख्य रूप से यूरोपीय समाजों पर ही दिखाई दिया। संसार के विभिन्न भागों में बदलाव की गति तेज थी परंतु विकास का स्तर अलग अलग स्थानों पर भिन्न रहा। आप पिछली इकाई में इसका कारण समझ ही चुके होंगे कि कैसे असमान विकास तथा नव-उपनिवेशवाद ने उपनिवेशवाद के पुराने स्वरूप का स्थान ले लिया था। कई गैर-यूरोपीय समाजों ने अभी भी अपनी कुछ पुरानी विशेषताओं, विशेषतः सांस्कृतिक व सामाजिक रीतियों को बनाए रखा था।

पिछली इकाई की भांति इस इकाई में भी हमारे अध्ययन का मुख्य केन्द्र यूरोप रहेगा, परंतु साथ ही हम शेष विश्व के साथ उसके विकास का तुलनात्मक अध्ययन भी करेंगे। हमारे विचार विमर्श का केन्द्र विस्तृत जानकारी की जगह मुख्यतः बदली प्रवृत्तियों, बदलाव की दिशा, तथा वस्तु विषय रहेंगे।

14.2 जनसांख्यिकीय बदलाव, प्रवासीकरण तथा नगरीकरण

बीसवीं शताब्दी में विविध कारणों, विशेषतः विश्वयुद्धों के परिणामस्वरूप 187 मिलियन लोगों की मृत्यु के बावजूद 1990 के दशक तक संसार की जनसंख्या में, प्रथम विश्वयुद्ध के प्रादुर्भाव के बाद की जनसंख्या की तुलना में तीन गुणा वृद्धि दर्ज की गई। यह अनुमान लगाया गया कि विश्व की जनसंख्या लगभग पांच से छहः बिलियन पहुंच चुकी थी। इस परिस्थिति में अच्छी चिकित्सा सुविधाओं के बावजूद विश्व के पश्चिमी भाग में कुल जनसंख्या का केवल 1/6 भाग ही रहता था। आप अचंभित हो सकते हैं कि ऐसा क्यों।

इसके अनेक कारण रहे। विश्व के गैर-पश्चिमी (अन्य भागों में) क्षेत्र में केवल बीसवीं शताब्दी में ही चिकित्सा सुविधाओं का प्रभाव पड़ा। समाजों के संदर्भ में बात की जाए तो कृषि प्रधान व्यवस्था में अभी भी अनेक बच्चे अपने परिवार की उत्तरजीवितता हेतु श्रमिक के रूप में ही देखे जाते थे योजनाकारों के विपरीत लोग बच्चों को केवल पेट पालने वाले लोगों की संख्या के रूप में नहीं देखते। समग्र रूप से गैर-पश्चिमी भाग में वृद्धि दर ऊँची रही तथा पश्चिमी भाग में जनसंख्या दर में गिरावट आई। हालाँकि पुत्र को वरीयता देने के कारण उदाहरण के लिए भारत और चीन में, लिंग-अनुपात में काफी गड़बड़ हुई है।

यूरोप में लाखों की संख्या में मौतों के कारण, पारिवारिक जीवन भंग हो गया, लिंग अनुपात पर भी प्रभाव पड़ा। देरी से विवाह करना एक प्रकार का मानक बन गया। विश्व युद्ध के बाद दवाओं की प्रकृति में हुए विकास तथा जीवन स्तर में सुधार ने जीवन प्रत्याशा में वृद्धि की। साथ ही जनसंख्या में बढ़ती उम्र वाली आबादी बढ़ी। विशेष रूप से सोवियत संघ में द्वितीय विश्वयुद्ध में अनेक पुरुषों के हताहत होने के कारण पुरुष व महिला का अनुपात 1:4 हो गया।

प्रवासन की प्रवृत्तियों में भी बदलाव हुआ। जहां शताब्दी के आरंभिक भाग में जनसंख्या के अधिकांश भाग का स्थानांतरण यूरोप से बाहर की ओर था वहीं शताब्दी के बाद के

वर्षों में पश्चिमी विश्व की ओर प्रवासन में वृद्धि देखी गई। लेकिन प्रवासन की इस प्रक्रिया ने कौशल आधारित पेशेवरों के प्रवासन को बढ़ावा दिया। उदाहरण के लिए डॉक्टरों का प्रवासन काफी बढ़ गया।

पूँजीवादी औद्योगीकरण ने नगरीकरण तथा नगरों तथा छोटे शहरों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि को बढ़ावा दिया। विकासशील देशों में भी छोटे शहरों की संख्या में वृद्धि हुई। अब बाद विश्व की लगभग आधी आबादी शहरों में निवास करती है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूरोप में तो कई शहर काफी बड़े थे ही, परंतु अब विकासशील विश्व में भी कुछ बड़े शहरों का विकास हुआ जैसे कि कोलकाता, दिल्ली, काइरो, शंघाई, नैरोबी, सियोल, बैंकाक आदि।

अगर हम व्यावसायिक ढाँचे को देखें तो सामान्यतः शहरीकरण की गति प्रत्येक क्षेत्र में समान नहीं होती। उदाहरण के लिए जहां अमेरिका और यूरोप में मशीनों के प्रयोग में वृद्धि के परिणामस्वरूप यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में कृषि क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या में कमी देखी गई और किसान वर्ग लगभग विलुप्त हो गया, वहीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक भी लैटिन अमेरिका, एशिया तथा अफ्रीका में जनसंख्या, का एक बड़ा भाग अभी भी कृषकों का ही था। कार्यरत लोगों की संख्या की दृष्टि से भी कृषि क्षेत्र में ही सर्वाधिक लोग संलग्न पाए गए। जापान इस संदर्भ में अपवाद माना जा सकता है। इन समाजों में प्रतिकूल भूमि-व्यक्ति-वितरण अनुपात के कारण और कुछ देशों में कृषि संकट के कारण रोजगार के अवसरों की खोज में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर काफी आंतरिक प्रवासन हुआ। अगर हम 1970 के दशक के अनुमानों को देखें तो हम पाते हैं कि 80 प्रतिशत से अधिक लोग यूरोप में (रूस को छोड़कर) शहरी क्षेत्रों में रहते थे और ब्रिटेन और अमेरिका में 95 प्रतिशत कार्यरत जनसंख्या और 80 प्रतिशत जापान की जनसंख्या सेवाओं और विनिर्माण में संलग्न थी।

14.3 आधुनिक वर्गीय समाजों में बदलाव

आप पहले पढ़ चुके हैं कि किस प्रकार से पूंजीवादी औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप आधुनिक सामाजिक वर्ग अस्तित्व में आएः पूंजीवाद की विकासात्मक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप बुर्जुआ तथा मजदूर वर्ग का उद्भव हुआ। भूमि आधारित कुलीन वर्ग तथा कृषक जो कि औद्योगीकरण के पहले से विद्यमान थे, वे भी पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा रूपांतरित कर दिए गए। ये पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से जुड़ गए थे और उनका चरित्र बदल गया था। यह परिवर्तन भी पूरे विश्व में एक समान रूप से नहीं हुआ था। इसके पीछे भी विश्व के अलग-अलग भागों में पूंजीवादी विकास की प्रक्रियाओं का भिन्न प्रकृति या स्वरूप का होना ही था। इसकी गति और विकास असमान था।

उच्च व्यावसायिक एवं प्रशासनिक पदों पर बुर्जूआ वर्ग के लोग विद्यमान थे परिणामतः पश्चिमी विश्व के अधिकांश भाग की अर्थव्यवस्था पर औद्योगिक व वित्तीय बुर्जूआ वर्ग का आधिपत्य था। आधिपत्य की यह प्रवृत्ति बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अधिक सुस्पष्ट थी। यहां तक कि तृतीय विश्व के विकासशील देशों में भी ये मानक के रूप में स्थापित हो चुका था। हालांकि इन देशों में भूमिपति वर्ग अभी भी अपनी शक्ति का प्रयोग किया करते थे। साथ ही वे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का भाग भी बने। संयुक्त राज्य अमेरिका में सीमित संख्या में ही सही, बड़े एवं प्रभावशाली कृषक पूंजीपति हैं जो कृषि-व्यवसाय को सब्सिडी देने के समर्थन में सरकार पर दबाव डाला करते हैं। वृहद स्तर पर मशीनों के प्रयोग से कृषि क्षेत्र में रोजगार कम हुआ परंतु उत्पादन अधिक ही रहा। चीन ने 1949 की क्रांति द्वारा बड़े जमींदार वर्ग को नष्ट कर दिया था।

जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया पश्चिमी विश्व, जापान तथा दक्षिण पूर्व एशिया में, जिनकी अर्थव्यवस्थाओं का ढांचा बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तीव्र औद्योगीकरण की प्रक्रिया से

गुजरा था, कृषक प्रत्यक्षतः लगभग विलुप्ति की ओर थे। अफ्रीका तथा एशिया में चीन सहित मध्य-पूर्व के कुछ हिस्सों में कृषक जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। चीन का हाल के दर्शकों में तेजी से औद्योगिकरण रखा हुआ है तथा कृषीय भूमि का कॉरपोरेट द्वारा अधिग्रहण तथा खाद्य फसलों के बजाए निर्यात फसलों को प्रोत्साहन देने वाली नीतियों के कारण इन राष्ट्रों में भूमिहीनता बढ़ी तथा इसने संकट उत्पन्न किया और भारत में हजारों किसानों ने आत्महत्याएँ की हैं। लैटिन अमेरिका में अब जाकर इन प्रतिकूल नीतियों को पलटा गया परंतु 1980 तथा 1970 के दशक में वहां भी किसानों को कड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। चीन एक ऐसा राष्ट्र था जिसने औद्योगीकरण को अपने कृषकों के हितों की रक्षा के साथ जोड़ा जिससे उनके बीच में साक्षरता बढ़ी तथा जीवन स्तर में अत्यधिक वृद्धि हुई। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में चीन में भी बाजार सुधार किए गए जिसने चीन के कई भागों में असंतोष तथा गरीबी को जन्म दिया। सोवियत संघ में काफी साक्षर और समृद्ध कृषक वर्ग था लेकिन संघ के पतन के बाद रूस और उससे भी ज्यादा इससे अलग हुए मध्य-एशिया के गणराज्यों में जीवन स्तर में काफी गिरावट आई है।

पूरे विश्व में 1945 के बाद बुर्जूआ वर्ग या मध्यम वर्ग की संख्या में प्रसार हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विकास तथा अर्थव्यवस्था के प्रसार की वजह से इनको धन प्राप्ति तथा समाज एवं राजनीति के क्षेत्र में लाभ प्राप्त हुआ। यह विशेष रूप से टूटी अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण से उत्पन्न निजी पूँजी के कारण हुआ। ये लोग कारखानों तथा सेवा उद्यमों के मालिक, बैंकर, खदानों के मालिक, इन उद्यमों के प्रबंधक तथा अधिकारी थे। इन वर्गों में जिन्होंने वृद्धि दर्ज की इनमें, अफसरशाही तथा पेशेवर वर्ग थे जो सूचना प्रौद्योगिकी, औषधि तथा अभियांत्रिकी के क्षेत्र से थे। जो सेवा क्षेत्र में समानांतर वृद्धि का महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी।

अन्य लोग भी थे जो इन उद्यमों तथा सेवाओं में निम्न स्तरों पर थे, जिन्हें "निम्न मध्यम वर्ग" भी कहा जा सकता है, जिनका रहन सहन उच्च मध्यम वर्ग से बहुत अलग था तथा जिन्होंने बाजार समाज की सभी असुरक्षाओं का सामना किया, विशेषतः आर्थिक मंदी के समय में। श्रमिक वर्ग के साथ एकजुटता की अभिव्यक्ति के बजाए इनकी आकांक्षाएँ मध्यम वर्ग के ऊपरी स्तर के करीब थीं।

इस वजह से कुछ सामाजिक वैज्ञानिकों को यह कहना पड़ा कि श्रमिक वर्ग सिकुड़ता चला जा रहा है तथा आज हमारे पास एक उत्तर औद्योगिक समाज है जिसमें मध्यमवर्ग के अंतर्गत स्तरीकरण है। परंतु यह आंशिक तौर पर ही सही है। प्रथमतया यह विचार विश्व के एक काफी छोटे भाग पर ही लागू होता है। दूसरा, इनमें से कई लोग उच्च वेतन प्राप्त करते हैं पर फिर भी वे उसी प्रबंधन नीतियों के अधीनस्थ कर्मचारी हैं जैसे कि श्रमिक वर्ग। एक प्रकार से वे कम्प्यूटर युग के श्रमिक हैं।

पूर्व समाजवादी राष्ट्र जैसे सोवियत संघ तथा चीन ने उत्पादन प्रणाली में निजी सम्पति के उन्मूलन की वजह से बुर्जूआ वर्ग का एक वर्ग के रूप में लोप होते हुए देखा। इन राष्ट्रों में औद्योगिक उद्यमों का स्वामित्व राज्य के हाथ में था तथा अधिकांश सेवाएं राज्य द्वारा ही प्रदान की जाती थी। कार्य के विभिन्न स्तरों के बीच मध्यम वर्गीय व्यवसायों और श्रमिकों के बीच वेतन में कम अंतर तथा सभी वर्गों को राज्य द्वारा कल्याणकारी सेवाएं, उदाहरण के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य मुफ्त में उपलब्ध करवाए जाने की वजह से यहां रहन सहन में अंतर तथा असमानताएं, उस प्रकार की नहीं थी जैसी कि पूंजीवादी विश्व में थी। ये अंतर सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप में समाजवाद के पतन के साथ दोबारा उत्पन्न हुए। 1980 के दशक के अंतिम भाग में तथा 1990 के दशक में इन राष्ट्रों में भी उद्यम के निजी स्वामित्व का उद्भव हुआ, हालांकि पश्चिमी यूरोप तथा अमेरिका की तुलना में यह छोटे पैमाने पर ही है।

पूर्ववर्ती उपनिवेशों में अनौपनिवेशीकरण की प्रक्रिया तथा स्वतंत्र औद्योगीकरण के प्रयासों ने मजबूत बुर्जूआ तथा एक शक्तिशाली पेशेवर मध्यम वर्ग विशेषरूप से भारत में, को जन्म दिया। साथ स्वतंत्रता आंदोलन के जनवादी चरित्र से जुड़े विभिन्न प्रकार के राजनैतिक नेतृत्व के उदय को देखा। धीरे-धीरे कृषि में हुए परिवर्तनों से एक महत्त्वपूर्ण ग्रामीण बुर्जूआ वर्ग का उदय हुआ तथा औद्योगिक वृद्धि के कारण इन समाजों में उद्यमी वर्ग प्रभुत्वशाली सामाजिक वर्ग बन गया। ऐसा विशेषतया भारत के मामले में हुआ जहां 1960 तथा 1970 के दशक में हरित क्रांति के अंतर्गत भूमि का यांत्रिकीकरण तथा सुदृढ़ीकरण देखा गया। 1980 के दशक के अंतिम भाग तक बुर्जूआ वर्ग प्रशासनिक संरचना, शिक्षा तथा प्रबंधकीय नौकरियों के विकास से लाभान्वित होने वाले मुख्य वर्ग थे। विकासशील देशों में सेवा क्षेत्र के उल्लेखनीय विकास, खासकर सूचना प्रौद्योगिकी, संचार, तथा कम्प्यूटर क्रांति ने, बड़ी संख्या को सेवा क्षेत्र के साथ जोड़ा। हालांकि विकास की तीव्रगति जिसके साथ नए क्षेत्रों के लिए उच्चतर आय का आवश्यक संबंध था, 1990 के दशक से ही मिली।

मजदूर वर्ग का गठन, मजदूरी पर निर्भर, प्रत्यक्ष रूप से पूंजीवादी उद्योगों के विकास से जुड़ा था। यह इस प्रकार के श्रमिक थे जो उन्नीसवीं सदी के बाद आए थे। हालांकि यूरोप में भी, बीसवीं शताब्दी तक भी श्रमिक वर्ग काफी विभेदीकृत तथा स्तरीकृत था क्योंकि यूरोप के सभी भागों में सभी राष्ट्र समान गति एक ही समय से विकसित नहीं हुए। वांछित कौशल की प्रकृति यांत्रिकीकरण की दर के हिसाब से रूपान्तरित हो गई थी। तकनीकी के प्रयोग में कुशल श्रमिक, जो धातु निर्माण, विद्युत उद्योग तथा इलैक्ट्रॉनिक्स आदि से जुड़े थे, वे उससे अलग थे जो हस्तकौशल में निपुण थे जैसेः बढ़ई, जूता निर्माण, छपाई, व्यापार या फिर बेकरी के कारीगर तथा दर्जी आदि। धीरे-धीरे बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सभी व्यवसाय तकनीकी उन्नति की वजह से परिवर्तित हुए। पाश्चात्य विश्व में अब बाल कटवाना, वस्त्र सिलवाना, घरेलू कार्य, मिस्त्री तथा निर्माण कार्य इतने अधिक मंहगे हो गए हैं कि उपभोक्ताओं का एक विशेषाधिकार प्राप्त समूह ही इनकी सेवाओं का उपयोग कर सकता है। इसका मतलब है कि वे मजदूर वर्ग के भीतर अल्प संख्यक बन गए। हालांकि विकासशील देशों में अपने समकक्षों की तुलना में उन्हें अच्छा भुगतान प्राप्त हुआ।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम भाग में वैश्वीकरण तथा नव-उदार नीतियों के साथ जब उत्पादन कार्य पूरे विश्व के सस्ते श्रम वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गया तब इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी दुनिया में फैक्टरी श्रमिकों के वर्ग की संख्या में गिरावट आई। अब उन श्रमिकों जिन्हें कल्याणकारी नीतियों का लाभ प्राप्त हुआ तथा वे श्रमिक जो "निम्नवर्ग" के थे, के बीच सामाजिक स्तर, सामाजिक स्थिति, जीवन स्तर, निवास स्थान का क्षेत्र तथा राजनैतिक दृष्टिकोण के आधार पर व्यापक अंतर उत्पन्न हुआ। इंग्लैण्ड में यह उच्चस्तरीय श्रमिकों के लेबर पार्टी के बजाए मार्गरेट थैचर तथा उसकी रूढ़िवादी नीतियों को समर्थन देने के परिवर्तन में स्पष्ट रूप से दिखा।

विकासशील राष्ट्रों में फैक्ट्रियों में निर्माण और विनिर्माण में लगे मजदूर वर्ग की संख्या बढ़ी विशेषतः उन देशों में जहां बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने फैक्ट्रियों को स्थापित करने में निवेश किया था फिर चीन तथा भारत जैसे राष्ट्र जिनका स्वयं का औद्योगिक आधार मजबूत था। फिर भी, यहां भी, कृषि की तुलना में विनिर्माण में लगे श्रमिक वर्ग की संख्या कम थी। भारत की तुलना में चीन के पास काफी बड़ा श्रमिक वर्ग है। यूरोप के समाजवादी राष्ट्रों में श्रमिक वर्ग केवल संख्या के आधार पर ही नहीं अपितु राजनैतिक व्यवस्था में भी महत्त्वपूर्ण माने गए। परंतु समाजवादी राज्य के अवसान तथा समाजवादी विचारधारा के पतन से इसमें परिवर्तन आया।

इसके अतिरिक्त विकासशील देशों में कुशल शिल्पकार, घरेलू कर्मचारी, दर्जी, धोबी, छपाई कर्मचारी, मिस्त्री और निर्माण श्रमिक, पोस्ट तथा टेलीग्राम कर्मचारी, रेलवे कर्मचारी, खदान

मजदूर, कुशल तथा अकुशल फैक्ट्ररी श्रमिक आज भी समान रूप से अस्तित्व में हैं। तथ्यात्मक रूप से देखें तो अनौपचारिक क्षेत्र में लगे श्रमिकों की संख्या औपचारिक क्षेत्र के मजदूरों से अधिक है। "स्थायी" नौकरी तथा ठेके के मजदूर या दैनिक वेतन के आधार पर कार्यरत व्यक्तियों और कुशल तथा अकुशल श्रमिकों के बीच जीवन स्तर तथा वेतन का व्यापक अंतर है। चिकित्सा अवकाश, प्रसूति अवकाश, आवास, निम्नतम आय आदि वे चीजें हैं जो कि अनौपाचारिक श्रम बाजार में सार्वभौमिक नहीं हैं।

युद्ध के पश्चात विभिन्न नौकरियों में महिलाओं ने श्रम बाजार में व्यापक तौर पर प्रवेश किया, यहां तक कि उन क्षेत्रों में भी जो विकल्प पहले उनके लिए खुले नहीं थे। हालांकि अधिकतर देशों ने कार्यक्षेत्र में महिलाओं के लिए समान अधिकारों को मान्यता दी पर वास्तविकता में सार्वजनिक क्षेत्र की सेवाओं के अलावा महिलाओं को बमुश्किल ही समान वेतन प्राप्त हुआ। यह सबसे उन्नत राष्ट्रों के साथ-साथ एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका के विकासशील देशों के बारे में भी सच है। भारत में वे कृषिश्रम, काफी संख्या में शिक्षित और नर्स और घरेलू क्षेत्र में समान भागीदार हैं।

14.4 कार्य के तरीकों में परिवर्तन

हमारी पिछली इकाइयों में आपने इस बारे में पढ़ा कि कैसे पूंजीवादी औद्योगीकरण ने कार्य के तरीकों को प्रभावित किया– कार्य के नियत घंटे, मशीनरी से जुड़ा अनुशासन तथा नियम आदि। सदी के बाद के भाग में कार्य करने के तरीकों के संदर्भ में परिवर्तनों की एक और शृंखला आई। हालांकि यह न ही अचानक हुआ और न ही सभी स्थानों पर समान। आप अब तक "गृह से कार्य", "फ्लैक्सी-टाईम", "फ्रीलांस कार्य" आदि शब्दों से परिचित हो चुके होंगे। इनकी शुरुआत तब हुई जब विकसित देशों की कुछ बड़ी फर्मों को यह अनुभव हुआ कि कम्प्यूटर युग में घर से ही कार्य करना संभव है तथा परिवहन भत्ते की आवश्यकता के बगैर तथा दफ्तर की आधारभूत संरचना, रख रखाव एवं सुविधाओं पर खर्च किए बिना नियोक्ताओं के लिए कार्य को सॉफ्टवेयर के माध्यम से नियंत्रित एवं पर्यवेक्षित करना सरल होगा। सभी नहीं परंतु काफी नौकरियां इन आधारों पर की जा सकती हैं। हालांकि यह दावा किया गया कि वे कर्मचारियों को लाभ पहुंचा रहे हैं परंतु इसका अर्थ यह भी था कि कर्मचारी अब लम्बे कार्यावधि के लिए उपलब्ध थे; वास्तव में इसका मतलब यह था कि कर्मचारी कभी भी काम से बाहर नहीं होते थे क्योंकि कभी-कभी लक्ष्यों को पूरा करने में आठ से अधिक घंटे लेते थे और घर पर कैंटीन की सुविधा भी नहीं देनी थी। खासकर महिलाओं को घर तथा ऑफिस (कार्यालय) में परम्परागत कार्यावधि के दौरान तथा उसके बाद भी दोनों समय 'डयूटी' के लिए तत्पर रहना पड़ता था। बिना स्पष्ट तथा नियत कार्यावधि से यह दोहरा बोझ निरंतर बना रहता है। इसके अलावा "अवकाश" की अवधारणा भी फीकी पड़ गई क्योंकि कर्मचारी एक कार्यालय में काम नहीं करता है। तथा उसने कर्मचारियों की सामूहिक कार्यवाई की संभावना को भी घटा दिया। इनका परिणाम कर्मचारियों के लिए बहुत नकारात्मक रहा। आज यह विकासशील देशों में, बी.पी.ओ. तथा कॉल सेंटरों में एक सा है जो कि महानगरों में बहुत सामान्य हो गए हैं। ये कर्मचारी cybertariat के रूप में जाने जाते हैं; अच्छे वेतन तथा वातानुकूलित कार्यालयों के बावजूद कार्य की शर्तों के संदर्भ में यह शुरुआती बीसवीं शताब्दी के श्रमिक वर्ग की तुलना में अपने नियोक्ता से संबंधों के स्तर पर कई अर्थों में कमजोर है।

कार्य प्रारूपों में परिवर्तनों की एक और लहर आउट सोर्सिंग (Out Sourcing) के कारण आई। यह भी बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों की घटना है जो कि वैश्वीकरण तथा पार-राष्ट्रीय कम्पनियों के उदय से जुड़ी है जिसके बारे में आपने पहले पढ़ा कि इनकी आर्थिक गतिविधियों का क्षेत्र राष्ट्रीय सीमाओं को पार करता है। इन्होंने अपने कुछ कार्य

उन विकासशील देशों को स्थानांतरित कर दिए जहां वेतन तथा निर्माण लागत कम थी। इसका एक परिणाम यह हुआ कि विकसित राष्ट्रों में श्रमिकों के रोजगार स्तर में कमी आई तथा जहां पर कार्य का स्थानांतरण किया गया उन राष्ट्रों में रोजगार स्तर में वृद्धि हुई। परंतु अधिकांशतः यह श्रमिकों के लिए कम लाभप्रद शर्तों पर हुआ जैसे कम वेतन, कम लाभ और सुरक्षा तथा कार्य करने की परिस्थितियों पर कम ध्यान।

एक अन्य परिघटना के रूप में आरंभिक पूंजीवाद के श्रमसाध्य कार्य स्थल (अर्थात् एक ऐसी फैक्ट्री या स्थान जहां पर वेतन कम होने के साथ-साथ कार्यदशाएं अत्यंत खराब एवं यहां तक कि गैर-कानूनी भी हों) का वापस लौटना था। यह लघु उद्यमों में अनुबंध आधारित नौकरियों के रूप में देखा गया जिसमें कई बार कार्य का भुगतान प्रति उत्पादित वस्तु की दर पर श्रमिक के घर में उत्पादन के बदले दिया जाता था। यह विकासशील देशों के श्रमिकों का सर्वाधिक शोषणकारी समूह रहा।

बोध प्रश्न 1

1) युद्धोत्तर विश्व में श्रमिक वर्ग द्वारा किन परिवर्तनों का सामना किया गया। संक्षेप में वर्णन करें।

....

....

....

....

....

....

2) जनसांख्यकीय और वर्ग समाज में दिखाई देने वाले परिवर्तनों को रेखांकित करें।

....

....

....

....

....

....

14.5 शहर

यूरोप के ग्रामीण क्षेत्रों में सभी सुख सुविधाओं की उपलब्धता के परिणामस्वरूप वहां पर शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर के मध्य जो दूरी थी वह युद्ध के बाद के वर्षों में विशेषतः बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में पर्याप्त रूप से समाप्त हुई। हालांकि अभी भी शहर वित्तिय केन्द्र बने हुए थे, जो कि अर्थव्यवस्था, शासन और राजनीति को नियंत्रित करते थे। सामान्य रूप से मीडिया, स्टॉक एक्सचेंज, बहुराष्ट्रीय कम्पनी, उनके कार्यालय, बैंकिंग तथा वित्तीय पूंजी तथा सांस्कृतिक संस्थाओं आदि के रूप में सम्पदा के केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति शहरों की ओर ही जारी रही। विकासशीस देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल फोन, टीवी के प्रवेश, मॉल तथा बाजार, निर्माण उद्योग तथा यहां तक कि शैक्षणिक संस्थाओं

द्वारा छोटे शहरों में निवेश आरंभ करने के बावजूद यहां के शहरों तथा ग्रामीण इलाकों के बीच की दूरी (खाई) और अधिक चौड़ी हुई।

युद्धोत्तर वर्षों में तथा विशेष रूप से इक्कीसवीं शताब्दी में शहरों के भीतर ही अमीर व गरीब के जीवनयापन के तरीकों में काफी बड़ा अंतर दिखाई दिया एवं अंतर बढ़ने भी लगा। सुविधाओं व सहूलियतों की उपलब्धता के आधार पर आवासीय क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से सीमायें खींची जाने लगीं। निर्धनों का विस्थापन तथा शहर की सीमा में भूमि पर नियंत्रण, जो कि विकसित देशों का एक लक्षण था, अब विकासशील देशों में भी नजर आने लगा है। वास्तव में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में समाज के विभिन्न भागों के लिए विकास का यही अर्थ बन गया। श्रमिक तथा निम्न स्तरीय जनसंख्या को उनकी सेवाओं के नियमित प्रयोग के बावजूद, शहरों के पॉश इलाकों से, जहां पर बहुमंजिला अपार्टमेंट, बड़ी व चौड़ी सड़कें, शैक्षणिक संस्थाएं, अस्पताल, शॉपिंग मॉल, बड़ी दुकानें तथा अन्य सुख-सुविधाएं विद्यमान थीं, बाहर धकेल दिया गया। शहर का भूपरिदृश्य, यातायात के साधनों का स्वरूप तथा अवकाश के समय का स्वरूप भी बदला।

14.6 परिवार

पूंजीवादी औद्योगीकरण तथा शिक्षा के प्रसार के परिणामस्वरूप एकल व संयुक्त दोनों प्रकार के परिवारों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन परिलक्षित हुए। युद्धोत्तर वर्षों में महिलाएं जो कि युद्ध के दौरान पुरुषों वाली नौकरियों के लिए अपने घरों की चारदीवारी से निकल कर बाहर आई थीं, समाज व अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका को बनाए रखना चाहती थीं। प्राकृतिक रूप से इसका प्रभाव पारिवारिक जीवन पर पड़ा। केवल कृषि क्षेत्र को छोड़कर, जिसका हमने उपरोक्त भाग में विवेचन किया, अब परिवार उत्पादन की इकाई नहीं रह गए थे। कृषि क्षेत्र में भी जैसा हमने ऊपर चर्चा की, यूरोपीय देशों तथा अमेरिका में संख्या की दृष्टि से गिरावट देखी गई। हालांकि वे उपभोग के तौर पर एक इकाई के रूप में बरकरार रहे।

अब यह एक मानक बन चुका था कि एक ही परिवार के विभिन्न लोग अलग-अलग स्रोतों से अपनी आय का सृजन करेंगे। पुरुष की आय सम्पूर्ण 'परिवार की आय' अर्थात पूरे परिवार के जीवनयापन की एक ही व्यक्ति की आय पर निर्भरता तथा महिलाओं के कार्यक्षेत्र की घरेलू कामकाज तथा बच्चों के लालन पालन की गतिविधि तक सीमित करना, जैसे विचारों पर गंभीर रूप से प्रश्न उठाए गए। जिससे विकसित देशों में इन विचारों की संभाव्यता में कमी आई। लैंगिक समानता तथा दुगनी आय के मध्य सहसंबंध को मान्यता मिली तथा इसने मध्यम वर्गीय शिक्षित परिवारों की अभिलाषा जागृत की। कई नौकरियों में महिलाओं का आधिपत्य हो गया; जैसे कि दुकानों तथा दफ्तरों में तथा नर्सिंग एवं शिक्षण के क्षेत्र में आदि। कई महिलाएं पत्रकार, फोटोग्राफर, डाक्टर तथा इंजीनियर बनी। साथ ही कई महिलाओं ने पेशेवर खेल प्रतियोगिताओं जैसे कि विम्बिलडन तथा अमेरिकी ओपन आदि में भागीदारी भी की। सोवियत संघ में एक बड़े प्रतिशत में महिलाएं केन्द्रीय संसद तथा वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों में सक्रिय थीं।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों के दौरान एकल परिवार व्यवस्था संकट की स्थिति में थी। विकसित देशों में युवा बच्चे अलग होकर रहने लगे वृद्ध माता-पिता भी अलग रहने लगे और तलाकों की संख्या में वृद्धि हुई। बदलते मानकों के साथ परिवार की नींव और अधिक कमजोर व नाजुक होने लगी। इसके परिणामस्वरूप एकल महिला मुखिया वाले परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई। विकासशील देशों में परिवारों का स्वरूप तुलनात्मक रूप से अधिक मजबूत था। यहां परिवार के बच्चे विवाह तक तथा कई बार विवाह के बाद भी

अपने अभिभावकों या माता-पिता के साथ ही रहते थे। हांलांकि कुछ महानगरों व शहरों में बदलाव देखा गया है लेकिन अभी भी बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल परिवार के सदस्यों द्वारा ही की जाती है। छोटे शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी संयुक्त परिवार प्रणाली है, संयुक्त परिवार एक तरफ जहां सदस्यों के लिए मजबूत सहारा बनता है तो दूसरी ओर उन युवा सदस्यों के लिए बाधक के रूप में सामने आता है जिनसे पुरानी मान्यताओं व रिवाजों का पालन करने के लिए अब बाध्य नहीं रहना चाहते हैं।

14.7 लिंग-भेद एवं महिला समानता संबंधी मुद्‌दे

नारीवादी आंदोलन व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल देते थे। दूसरी तरफ, श्रमिक एवं समाजवादी आंदोलन पूरे समाज के परिवर्तन की बात करते थे (महिलाओं की भूमिका एवं दर्जा भी सम्मिलित)। समाजवादी संगठनों में यूनियन सदस्यों में महिलाएं काफी अच्छी प्रतिशत में थीं। हालांकि केवल कुछ को ही नेतृत्व की स्थिति प्राप्त हुई। "रोजा लक्ज़मबर्ग" तथा "बीट्राइस वेब" दो प्रख्यात समाजवादी नेताओं में थीं।

सामान्य रूप से, फिर भी, नई सामाजिक भूमिकाओं तथा रोजगार बाजार में भागीदारी ने महिलाओं में नई आकांक्षाएं तथा उम्मीदें उत्पन्न की और सार्वजनिक मताधिकार आंदोलन उनकी समानता की मांग की महत्त्वपूर्ण राजनीतिक अभिव्यक्ति बन गए। हालांकि मताधिकार की मांग मुख्यतः मध्यमवर्गीय मांग थी जो कि मुख्यतः ब्रिटेन तथा अमेरिका के महिला आंदोलनों में शामिल थी। समाजवादी आंदोलन वैसे तो इन पर केन्द्रित नहीं थे परंतु महिलाओं को मताधिकार के समर्थक थे। समय के साथ देखें तो समाजवादी राष्ट्रों की संसदों में चयनित महिलाओं का अच्छा प्रतिशत था। पूरे विश्व में कई महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली महिलाएं लेखिकाएं थी जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में योगदान किया।

भारतीय उपमहाद्वीप में तथा चीन में, महिलाओं की शिक्षा का प्रश्न तथा पिछड़ी हुई सामाजिक प्रथाओं का विरोध, राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष का एक अंग था। भारत, पाकिस्तान तथा श्रीलंका में स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप तथा चीन में भी 1949 की सफल क्रांति के फलस्वरूप महिलाओं को उनका मताधिकार मिला। 1990 तक पूरे विश्व में 16 राज्यों की सरकारों की सत्ता प्रमुख या तो महिलाएं थीं या रह चुकी थी। चीन, सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप के बारे में कहा जा सकता है कि इन्होंने महिलाओं के लिए शत प्रतिशत रोजगार एवं शिक्षा उपलब्ध करवाई। इसे समाज तथा अर्थव्यवस्था के समाजवादी संगठन से जोड़ कर देखा जा सकता है। सामान्य रूप से एशियाई, अफ्रीकी तथा दक्षिण अमेरिकी राष्ट्रों में महिला कार्यबल की संख्या में भी नाटकीय रूप से वृद्धि हुई।

फिर भी हम यह नहीं कह सकते कि महिलाओं की समानता विश्व के किसी भी देश में पूरी तरह अर्जित की जा सकी है। वैश्वीकरण तथा नव उदारवादी आर्थिक नीतियां पूरे विश्व में अपनाई गई तथा समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं के पतन ने अधिकांश जनसंख्या को विपरीत रूप से प्रभावित किया, खासकर सभी समाजों के श्रमिकों एवं गरीबों को। कई अध्ययनों में यह दिखाया गया है कि महिलाओं पर इसका प्रभाव ज्यादा हानिकारक रहा है। पश्चिमी समाजों में महिलाओं ने अपने आंदोलनों तथा समाज के सामान्य लोकतंत्रीकरण द्वारा प्राप्त किए गए, लाभों को बनाए रखा। परंतु पूर्व समाजवादी देशों, जहां उन्होंने सबसे ज्यादा लाभ प्राप्त किया था, वहां उन्होंने अब उनमें से काफी लाभ खो दिए थे। मुफ्त स्वास्थ्य सुविधा, एक समान तथा मुफ्त शिक्षा और मुफ्त सार्वजनिक सेवाएं जैसे बच्चों के आंगनवाड़ी खो देने ने उन्हें काफी चोट पहुंचाई तथा दोबारा से उन्हें पितृसत्तात्मक समाज की असमानताओं के सामने मजबूर कर दिया। पुरुषों के संबंध में महिलाओं की बेरोजगारी तथा जीवन प्रत्याशा दर विपरीत हैं। विकासशील देशों में महिलाएं गैर औपचारिक क्षेत्र में

धकेली जा रही हैं जहां श्रमिक के रूप में उनके अधिकार सुरक्षित नहीं हैं, जिसने उनको सामाजिक रूप से और कमज़ोर बना दिया है। कन्याभ्रूण हत्या, दहेज हत्या, बलात्कार तथा महिलाओं के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा में बीसवीं सदी के अंतिम दशक से वृद्धि हुई है। यह नव-उदारवादी नीतियों के कारण उत्पन्न हताशा और कई तरह से इन समाजों द्वारा महिलाओं को पारिवारिक सम्पदा में और सामाजिक आर्थिक अवसरों में सक्षम हिस्सेदारी न देने से जुड़ा है।

14.8 सांस्कृतिक बदलाव

बीसवीं शदी के उत्तरार्ध में कुछ ही नए तकनीकी अविष्कार हुए, परंतु उनके विभिन्न प्रारूपों में दूर तक पहुंच तथा व्यापक प्रयोग ने पूरे विश्व में दैनिक जीवन को परिवर्तित कर दिया। पहले पश्चिमी दुनियां में और फिर बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में विश्वभर में तेजी से, हालाँकि यहाँ पूरी आबादी को उसी तरह और एक ही परिमाण में प्रभावित नहीं किया। पूरे विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने सुविधासंपन्न लोगों के घरों में इलेक्ट्रोनिक उपकरण के साथ-साथ मनोरंजन और शिक्षा दोनों को प्रभावित किया। हम स्वयं भी शहरों में वैयक्तिक कारों के प्रयोग में तथा हवाई यात्राओं में वृद्धि और एडवांस कम्प्यूटर के प्रयोग में वृद्धि, टी.वी., मोबाइल फोन, S.T.D. की सुविधा और ट्रांजिस्टर से टेप रिकॉर्डर तथा उस से सी.डी., इंटरनेट, लेजर उपचार और अंग प्रत्यारोपण देख सकते हैं। हमने देखा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल विनाशकारी तथा लाभकारी और जिंदगी को आसान बनाने तथा असमान पहुंच के कारण बढ़ती विषमता, दोनों ही के लिए होता है। तकनीकी संचार में वृहत उन्नति के कारण लोकसंगीत तथा लोक कला में भी परिवर्तन आया, हालांकि इन्होंने अभिव्यक्ति में अपना सांस्कृतिक परिवेश बनाए रखा।

कला तथा साहित्य के क्षेत्र में बीसवीं सदी ने अग्रिम दस्ते का आधुनिकतावाद, समाजवादी यथार्थवाद और उसके बाद उत्तर आधुनिकतावाद से जुड़े आंदोलन देखें। ये उत्तर औपनिवेशिक समाजों में कला एवं साहित्य में रचनात्मक और प्रगतिशील प्रवृत्तियों के रूप में प्रतिबिंबित हुए। आपने पाब्लो नेरूदा, गैब्रियल गैरसिया मार्केज, लू सून, चिनूआ आशेबे के नाम तथा भारत में इंडियन पीपल्स थिएटर एसोसिएशन और प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन के बारे में सुना होगा।

शिक्षा तथा मनोरंजन का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत सिनेमा है तथा कई देशों के पास बड़ा सिनेमा उद्योग है। विश्व युद्धों के बाद के वर्षों में पूर्वी यूरोप ने विश्व की कुछ सर्वश्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण किया, तथा 20वीं सदी के उत्तरार्ध तथा 21वीं सदी के शुरुआती काल के लिए यही बात ईरान, मध्यपूर्व तथा चीन के लिए भी कहीं जा सकती है। भारत के पास हॉलिवुड के बाद दूसरा सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है तथा इसका सामाजिक जीवन पर काफी प्रभाव है। यहां फिल्मों तथा गानों के बदलते प्रारूप आपको बदलते समाज तथा पसंद की कुछ झलक देंगे। फिल्में बदलते समाज तथा राजनीति दोनों ही से प्रभावित होती है।

सामाजिक विज्ञान में शोध के नए क्षेत्रों ने विश्व इतिहास, महिला अध्ययन, पुरातत्वीय विकास आदि पर यूरोप केन्द्रित दृष्टिकोण को चुनौती देने का कार्य किया और महाद्वीपों में लोगों और सभ्यताओं के भौतिक जीवन पर प्रकाश डाला। भाषाओं के संदर्भ में देश की सीमा के भीतर एवं बारह के क्षेत्रों में एकरूपता की ओर झुकी हुई प्रवृत्ति विद्यमान थी। कुछ भाषाएं समाप्ति के कगार पर खड़ी थी क्योंकि उनकी उपयोगिता के निर्धारण का काम बाजार तथा नौकरी कर रहे थे। साथ ही सभी भाषाओं में लिखित व प्रकाशित सामग्री की उपलब्धता में समानता नहीं थी। आज लगभग 6500 भाषाएं प्रयोग में लाई जाती हैं। यद्यपि चीनी भाषा बोलने वाले लोगों की संख्या सर्वाधिक है फिर भी अंग्रेजी

आज विश्व की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। अधिकतर लोग एक से अधिक भाषाएं जानते हैं तथा अनेक लोग कई भाषाओं के जानकार हैं। भारत में अंग्रेजी न केवल संपर्क भाषा है, बल्कि विशेषाधिकार प्राप्त शक्तिशाली वर्ग की भाषा भी है। फ्रेंच तथा स्पेनिश भाषाएं भी अनेक देशों तथा महाद्वीपों में जानी जाती हैं। यद्यपि हिन्दी भाषा को सरकार द्वारा काफी महत्व प्रदान किया गया है, तदापि क्षेत्रीय भाषाओं जैसे कि मलयाली, बंगाली, मराठी तथा तमिल में अभी काफी कुछ अनुवादित साहित्य मिल जाता है। उर्दू भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या में भेदभावपूर्ण नीतियों के कारण कमी आई है।

जनसंचार के माध्यमों का विकास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसने परस्पर विरोधाभासी परिणामों को उत्पन्न किया है। क्योंकि जहां एक तरफ नई तकनीक ने विश्वभर में सूचनाओं के आदान प्रदान को काफी आसान बना दिया है, वहीं निजी स्वामित्व तथा इन तकनीकों पर नियंत्रण ने पश्चिमी विश्व को घरेलू स्थानीय बाजार में अपने प्रभुत्व को बनाए रखने में सक्षमता प्रदान की है। कई बार ये भेदभावपूर्ण एवं विकृत ज्ञान के प्रवाह का भी कारक बना है।

शिक्षा के क्षेत्र में इस दौरान वृहद विस्तार आया है जो कि चीन तथा पश्चिमी विश्व में लगभग 100% तक पहुंच गया है। यह बढ़ती साक्षरता दर विकासशील देशों में होती वृहद प्रगति में भी परिलक्षित हुआ है। उच्च शिक्षा में भी वृद्धि देखी गई, हालांकि विकासशील देशों में यह वृद्धि जनसंख्या के अनुपात में कम है। सेवा क्षेत्र की वृद्धि तथा वैश्वीकरण के साथ व्यवसायिक एवं पेशेवर शिक्षा की ओर झुकाव की प्रवृत्ति का विकास हुआ है।

धर्म में दोबारा सक्रियता देखी गई हालांकि लोगों के निजी जीवन में इसका प्रभाव कम से कम है। विश्व के अधिक आधुनिक होने के बावजूद धार्मिक एवं जातियता आधारित संघर्षों में समय तथा वर्षों के साथ वृद्धि हुई है। संभवतः आप स्वयं यह सोच सकते हैं कि हमारे अपने देश में या कहीं किसी अन्य स्थान पर ऐसा क्यों हो रहा है।

हालांकि ये परिवर्तन काफी धीमें हैं परंतु विश्वभर में लोगों की मानसिकता, अभिवृत्ति, मनोवृत्ति तथा मूल्यों में निश्चित तौर पर परिवर्तन आया है। उपभोक्तावाद सर्वव्याप्त हो गया है। उपभोक्तावाद एक ऐसी मनोवृत्ति है जिसमें वस्तुओं या चीजों के अधिग्रहण की पूर्व निर्धारित मानसिकता चाहे उनकी आवश्यकता न हो। 'नए मॉडल' तथा "विदेशी या असामान्य" प्रकार के सामान के प्रति सम्मोहन इसी का एक भाग है। मांग तथा फैशन को उत्पन्न किया जाता है तथा ब्राण्डों को विज्ञापनों द्वारा प्रचारित किया जाता है। इस तरह ये 'जीवनशैली' का हिस्सा बन गए हैं।

युद्धोत्तर वर्षों में युवा संस्कृति विशिष्ट रूपों में परिकल्पित हुई जैसे कि 'पीढ़ीगत अंतर', स्थापित प्रथाओं व परंपराओं के विरूद्ध विद्रोह, परिधान के स्वरूप, केश सज्जा, निजी संबंध विशेषतः स्त्री-पुरुष संबंध। 1960 एवं 1970 का दशक पश्चिमी देशों में "हिप्पी संस्कृति" के रूप में जाना गया। ये वर्ष युवाओं के उग्रीकरण तथा स्थापित व्यवस्थाओं एवं दक्षिणपंथी सत्ता के विरूद्ध विद्रोह के वर्ष भी बने। यह विद्रोह उस विद्यार्थी आंदोलन में परिलक्षित हुआ जिसने राज्य व्यवस्था को चुनौती दी तथा कामगारों की हड़ताल से भी जुड़े। अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति में वैश्वीकरण के साथ उपरोक्त परिवर्तनों का प्रभाव विकासशील देशों में भी विभिन्न रूपों में अनुभव किया गया जैसे कि व्यवहार में परिवर्तन तथा पुरानी परम्पराओं की चुनौती देना। हम देखते हैं कि 1970 का दशक एक उग्र दौर था जिसने आरंभिक रूढ़ियों के विपक्ष में तर्क दिए जबकि बीसवीं शताब्दी का अंतिम दौर जाति, धार्मिक विश्वासों एवं संबंधित सामाजिक रीतियों की अनुकूलता के पुनर्आगमन को अनुभव कर रहा था और आधुनिकता का प्रभाव केवल सतही ही था।

बोध प्रश्न 2

1) युद्धोत्तर विश्व में परिवार का स्वरूप किस तरह से बदला? इसने महिलाओं को कैसे प्रभावित किया?

....

....

....

....

....

....

2) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के सांस्कृतिक परिवर्तनों पर संक्षेप में चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

14.9 सारांश

जैसा कि आपने देखा कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नई तकनीक, विज्ञान तथा अर्थव्यवस्था ने मानव के दैनिक जीवन को प्रभावित किया। यह प्राथमिक रूप से अधिक विकसित देशों में देखा गया। इसका विकासशील देशों पर भी प्रभाव रहा जो कि मुख्यतः बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशको में परिलक्षित हुआ। वृहद स्तर पर उत्पादन के परिणामस्वरूप लोगों के एक बड़े भाग के जीवन स्तर में वृद्धि हुई। परंतु उपभोग स्तर के बढ़ने के बावजूद विडम्बनात्मक रूप से साधन संपन्न व साधनहीन वर्गों के बीच का अंतर और अधिक बढ़ गया।

समाजवादी समाज बढ़े हुए उत्पादन के लाभों के समान बंटवारे की वकालत तथा उसकी प्राप्ति की दिशा में कार्य करते थे, उनके पतन का परिणाम ना सिर्फ समाजवादी राष्ट्रों बल्कि पूंजीवादी विश्व में भी सामाजिक लाभों की हानि के रूप में सामने आया। सरकारें अब निजीकरण का समर्थन करने लगी तथा इसने सामाजिक कल्याण में कटौती को भी प्रभावित किया। विश्व के सभी क्षेत्रों में सुविधाविहीन वर्गों पर इसके परिणाम विनाशकारी हुए।

असमानता पूंजीवादी समाज का हिस्सा थी तथा सदैव बनी हुई है, परंतु बीसवीं शताब्दी में असमानता बढ़ती हुई प्रतीत होती है। वास्तव में उन्नत पूंजीवादी देशों एवं एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों एवं सभी देशों के धनवानों एवं निर्धनों, दोनों के बीच पूरी शताब्दी में असमानता बढ़ी। अधिक संसाधनों के बीच व्यापक भूखमरी भी है। दर्जन भर या कुछ व्यक्तियों की सम्पत्ति गरीब राष्ट्रों के सकल घरेलू उत्पाद से अधिक है। यह स्थिति विचार करने योग्य है।

हाल ही में विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं राजनैतिक संगठन जिनके अपने विशिष्ट उद्देश्य हैं, का उदय हुआ हैः ट्रेड यूनियन, महिलाओं एवं विद्यार्थियों के संगठन, कर्मचारियों के संगठन, विभिन्न प्रकार के कल्याणकारी तथा हितैषी संगठनों, शान्ति से संबंधित संगठन, पर्यावरण तथा अन्य कई मुद्दों से जुड़े संगठनों की संख्या बढ़ी। परन्तु अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे लीग ऑफ नेशन्स और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के वंशीभूत हो गये। इन्होंने राजनैतिक दलों के लिए सम्पूरक का कार्य किया। विकास की दुविधाएं हमारे सामने हैंः पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे उन्नत पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए ही दिखते हैं। सामाजिक असमानताएं, भूखमरी तथा गरीबी, अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था दोनों से जुड़े हुए ही देखे जाते हैं। सामयिक संकटों एवं पर्यावरणीय समस्याओं से प्रभावित उत्पादन एवं उपभोग के उच्च स्तर को निरंतर बनाए रखने और नियमित करने के लिए कौन सा रास्ता चुना जाए? विश्व दुविधा के इसी चौराहे पर खड़ा है।

14.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 14.3 तथा 14.4।

2) देखें भाग 14.2 तथा 14.3।

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 14.6 तथा 14.7।

2) देखें भाग 14.8।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY